असग़र अली इंजीनियर

इसलाम में लिबरेशन थियोलॅजी की तलाश
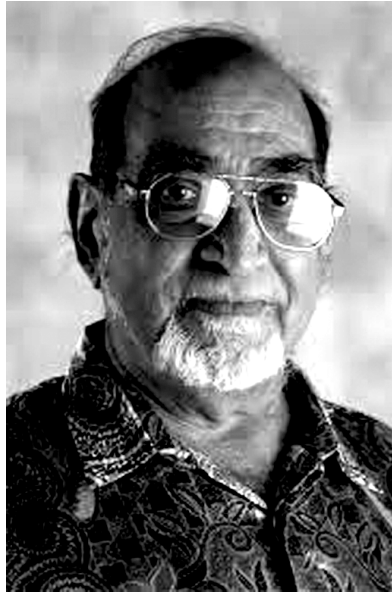
हिलाल अहमद

असग़र अली इंजीनियर (1939–2013) को समाज-विज्ञान और जनांदोलनों की दुनिया में अलग-अलग संदर्भों में जाना जाता है। कुछ लोग उन्हें इसलामी धर्म-सुधारक मानते हैं, कुछ के लिए वे सेकुलरवादी हैं, कुछ के लिए इसलाम के स्थापित विद्वान हैं, तो कुछ उन्हें एक कर्मठ एक्टिविस्ट के तौर पर देखते हैं। इंजीनियर की ये सारी छवियाँ उनके व्यक्तित्व और लेखन से उपजी हैं। सत्तर के दशक में उन्होंने मुसलिम बोहरा समाज के भीतर इसलाम के नाम पर होने वाले सामाजिक और आर्थिक दमन का विरोध किया। इसी वजह से बोहरा धर्म गुरु सैयादना ने उनका और उनके परिवार का हुक़्क़ा-पानी बंद कर दिया। दूसरी तरफ़ साम्प्रदायिकता का विरोध और साम्प्रदायिक दंगों का विश्लेषण इंजीनियर के लेखन का केंद्र-बिंदु रहा। इसी वजह से उन्हें सेकुलर विद्वान के तौर पर जाना गया। यही बात उनके इसलाम और जनांदोलनों संबंधित लेखन के विषय में भी कही जा सकती है। वे सामाजिक सरोकारों से जुड़े हर ज्वलंत मुद्दे पर लिखते रहे और साथ ही साथ सामाजिक आंदोलनों का हिस्सा भी बने रहे। इंजीनियर की तक़रीबन पचास पुस्तकें और उर्दू, हिंदी, अंग्रेज़ी में असंख्य लेख, रपटें और टिप्पणियाँ यह साबित करने के लिए काफ़ी हैं कि वे एक मँजे हुए लेखक थे। उनकी बौद्धिक योग्यताओं का सम्मान करते हुए कोलकाता विश्वविद्यालय ने

उन्हें डॉक्टरेट की मानद उपाधि से सम्मानित किया। 1997 में उन्हें राष्ट्रीय एकता पुरस्कार और 2004 में अंतर्राष्ट्रीय राइट टू लाइवलीहुड अवार्ड (जिसे वैकल्पिक नोबल पुरस्कार भी कहा जाता है) प्रदान किया गया।

इंजीनियर का जीवन और लेखन इतना रोचक है कि यदि इसे आत्मविश्वास, संघर्ष और राजनीतिक सक्रियता की जीवंत कहानी कहा जाए तो कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी। लेकिन यह कहानी दोहराने से इंजीनियर जैसे सृजनात्मक लेखक की व्यक्ति-पूजा तो सम्भव है, पर उनके व्यापक योगदान की विशेषता उजागर करना मुश्किल हो जाएगा। यह सही है कि वे अपनी मृत्यु के दिन तक सामाजिक आंदोलनों की राजनीति में सक्रिय रहे और लेखन भी जारी रहा; परंतु यह भी सही है कि उन्होंने न केवल लेखन और राजनीतिक सक्रियता की स्थापित व्याख्याओं से हट कर एक विशिष्ट बौद्धिक राजनीति की मान्यता क़ायम की, बल्कि उस पर अमल करके भी दिखाया। इंजीनियर को जानने का सबसे अच्छा तरीक़ा यही होगा कि उनकी बौद्धिक राजनीति की अवधारणा का विश्लेषण किया जाए ताकि उसकी विशिष्टताओं के विभिन्न पहलुओं पर चर्चा हो सके।

इंजीनियर के कृतित्व के दो ऐसे पहलू हैं जिन पर विस्तार से चर्चा नहीं हुई है। इनमें एक है उनके द्वारा अपनाया गया राजनीतिक व्याख्या-शास्त्र जिसके तहत उन्होंने विवेचना का एक ख़ास तरह का सिद्धांत विकसित किया ताकि धार्मिक ग्रंथों और समुदायों के सामाजिक गठन के इतिहास की ग़ैर-रूढ़िवादी और उन्मुक्त व्याख्या की जा सके। दूसरा पहलू है तर्क प्रस्तुत करने की उनकी विशिष्ट तकनीक जिसके ज़रिये वे एक ऐसे खुले तार्किक विमर्श की प्रस्तुति कर पाते थे जो राजनीतिक तौर पर प्रतिबद्ध तो था लेकिन जिसमें सामाजिक परिवर्तनों को आत्मसात करने की क्षमता भी थी।

इंजीनियर का शुरुआती लेखन दिखाता है कि जहाँ एक ओर वे इसलाम को महज़ धार्मिक रीति-रिवाज़ में लिप्त परम्परा नहीं मानना चाहते थे, वहीं वे साठ और सत्तर के दशक के समाज-वैज्ञानिक विमर्श से भी नाख़ुश थे। उस समय तक धर्म को समाज का ज्ञान ग्रहण करने की वैध और व्यवस्थित श्रेणी के तौर पर नहीं देखा जाता था। यह मान्यता थी कि विज्ञान और प्रगति से जाति और धर्म के बंधन ढीले होंगे, व्यक्ति स्वायत्त होता चला जाएगा और परिणामस्वरूप धर्म स्वत: विलुप्त हो जाएगा। यही कारण था कि तत्कालीन भारतीय मार्क्सवाद 'धर्म केवल अफ़ीम है' का नारा लगा कर उसकी मार्क्सवादी व्याख्या से बचता था। वहीं आधुनिकतावादी उदारतावादियों के लिए धर्म व्यक्ति को स्वायत्त बनाने से रोकने में सबसे बड़ी रुकावट थी। इस परिस्थिति का नतीजा यह निकलता था कि धर्म का विमर्श पूरी तरह से ख़ुद को धार्मिक कहने वाले रूढ़िवादियों के नियंत्रण में चला जाता था।

इंजीनियर ने धर्म को एक सामाजिक परिघटना के तौर पर समझने की कोशिश की। इस प्रयास में उन्होंने मार्क्सवाद का सहारा लिया। लेकिन मार्क्सवाद का यह इस्तेमाल न तो क्रांति के किसी तयशुदा अर्थ को निकालने का प्रयास था और न ही किसी तरह की बौद्धिक इंजीनियरिंग। यह एक ऐसी जद्दोजहद थी जिसके ज़रिये इंजीनियर इसलाम को समझने का एक दृष्टिकोण विकसित करना चाहते थे। यह कोशिश महज़ किताबी नहीं थी। उनके लिए हिंदुस्तानी मुसलमानों के मुद्दे इसलाम की आज़ाद समझ से जुड़े हुए थे।

इंजीनियर ने इन दोनों स्थापित विमर्शों से परे जा कर धर्म को एक सामाजिक परिघटना के तौर पर समझने की कोशिश की। उल्लेखनीय है कि इस प्रयास में इंजीनियर ने मार्क्सवाद का सहारा लिया। लेकिन मार्क्सवाद का यह इस्तेमाल न तो क्रांति के किसी तयशुदा अर्थ को निकालने का प्रयास था और न ही किसी तरह की बौद्धिक इंजीनियरिंग। यह एक ऐसी जद्दोजहद थी जिसके ज़रिये इंजीनियर इसलाम को समझने का एक दृष्टिकोण विकसित करना चाहते थे। यह कोशिश महज़ किताबी नहीं

थी। उनके लिए हिंदुस्तानी मुसलमानों के मुद्दे इसलाम की आज़ाद समझ से जुड़े हुए थे। 1975 से 1980 तक का उनका लेखन, ख़ासकर उनकी पुस्तक *इसलाम, मुसलिम, इण्डिया* (1975) इस तथ्य का परिचायक है।

इंजीनियर की यह तलाश उन्हें लिबरेशन थियोलॅजी के सिद्धांत तक ले गयी। इंजीनियर का कहना था कि धर्म की मौजूदा समझ मूलत: वर्चस्ववादी वर्ग के हितों और उद्देश्यों की रक्षा करने का एक माध्यम भर है। यह कोई नयी बात नहीं थी। प्रचलित मार्क्सवाद काफ़ी पहले से धर्म को अफ़ीम बताता चला आ रहा था। मार्क्सवादी होने का सबसे पहला और स्थापित अर्थ नास्तिक होना बन चुका था। अपने को मार्क्सवादी कहने वाले लोग, ख़ासकर अंग्रेज़ीदाँ मध्यवर्गीय मार्क्सवादी, इस आत्मविश्वास से परिपूर्ण थे कि उन्होंने धर्म का सवाल हल कर लिया है। लेकिन इंजीनियर के लिए धर्म कोई गणितीय सवाल या वैज्ञानिक दुविधा नहीं थी जिसे मार्क्स द्वारा प्रतिपादित किसी प्रमेय से हल कर लिया जाएगा। उनके लिए धर्म एक सामाजिक-ऐतिहासिक परिघटना थी और मार्क्सवाद एक सृजनात्मक दर्शन, जिसके ज़रिये धर्म की समतामूलक समझ विकसित की जा सकती थी।

इंजीनियर ने अपनी पुस्तक *इसलाम ऐंड लिबरेशन थियोलॅजी* (1990) में यह दर्शाने की कोशिश की कि यदि धर्म को उसके ऐतिहासिक संदर्भ में समझा जाए तो यह स्पष्ट हो जाता है कि वह अपने शुरुआती दौर में एक सामाजिक आंदोलन ही होता है। पैग़म्बर मुहम्मद के जिस धर्म को इसलाम कहा गया, वह दासों, महिलाओं और ग़रीबों पर होने वाले अत्याचारों के ख़िलाफ़ लोकप्रिय जनाक्रोश की सामूहिक अभिव्यक्ति थी। यही कारण है कि क़ुरान, ज़ालिम का विरोध करने और मज़लूम का पक्ष लेने को ईमान की पहली शर्त बताता है। लेकिन एक समय के बाद इसलाम एक व्यवस्थित धर्म बन गया। इसका कारण यह था कि वर्चस्ववादी वर्ग ने इसलाम को स्वीकार कर लिया और जिन कुरीतियों का विरोध पैग़म्बर कर रहे थे वे सब इसलाम के नाम पर स्थापित कर दी गयीं। इंजीनियर का मत है इस सब के बावजूद वर्चस्ववादी वर्ग क़ुरान के समानता के संदेश को मिटा नहीं सका जिस कारण अपने वर्तमान स्वरूप में भी इसलाम सामाजिक बराबरी का पक्षधर नज़र आता है। इसलाम के इसी रैडिकल मूलतत्त्व को इंजीनियर सामाजिक परिवर्तन के लिए अनिवार्य शर्त मानते हैं। दूसरे शब्दों में इंजीनियर की लिबरेशन थियोलॅजी न तो यह कहती है कि इसलाम एक ऐसी जीवन पद्धति है जिसमें इनसानी ज़िंदगी के हर सवाल का अर्थ छिपा है और न ही इस बात को मानने को तैयार है कि इसलाम एक रूढ़िवादी-कट्टरपंथी मज़हब है, जिसमें आज़ादी और सामाजिक बराबरी के लिए कोई स्थान नहीं है।

इंजीनियर का मत है इस सब के बावजूद वर्चस्ववादी वर्ग क़ुरान के समानता के संदेश को मिटा नहीं सका इस कारण अपने वर्तमान स्वरूप में भी इसलाम सामाजिक बराबरी का पक्षधर नज़र आता है। इसलाम के इसी रैडिकल मूलतत्त्व को इंजीनियर सामाजिक परिवर्तन के लिए अनिवार्य शर्त मानते हैं। दूसरे शब्दों में इंजीनियर की लिबरेशन थियोलॅजी न तो यह कहती है कि इसलाम एक ऐसी जीवन पद्धति है जिसमें इनसानी ज़िंदगी के हर सवाल का अर्थ छिपा है और न ही इस बात को मानने को तैयार है कि इसलाम एक रूढ़िवादी-कट्टरपंथी मज़हब है, जिसमें आज़ादी और सामाजिक बराबरी के लिए कोई स्थान नहीं है।

यही कारण है कि इंजीनियर का राजनीतिक व्याख्या-शास्त्र क़ुरान की समकालीन व्याख्या तक सीमित नहीं रहा। उन्होंने अपनी इस पद्धति को केंद्र में रख कर हिंदुस्तानी मुसलमान समुदायों की आंतरिक शक्ति-संरचना का विश्लेषण प्रस्तुत किया। मुसलिम पर्सनल लॉ और शाहबानो के मुद्दे पर उपलब्ध उनके लेखन से यह तर्क निकला कि इसलाम की एक स्त्रीवादी समझ भी सम्भव है। मुसलमानों के लिए आरक्षण के सवाल को उन्होंने मुसलिम जाति व्यवस्था विशेषकर दलित मुसलिम

के मुद्दे से जोड़ा और मुसलमानों के आर्थिक-शैक्षणिक पिछड़ेपन के प्रश्न को भूमण्डलीकरण के संदर्भ में समझने पर बल देते रहे।

इंजीनियर का साम्प्रदायिकता-विरोध, मुसलमान अभिजन की उनकी आलोचना और यहाँ तक कि उनका रूढ़िवादी मार्क्सवाद के प्रति असंतोष एकतरफ़ा नहीं था। उनकी आलोचना लफ़्फ़ाजी पर नहीं टिकी थी। इसके बरक्स, उनकी दिलचस्पी अपने विरोधी तर्क की आंतरिक संरचना को समझने में थी ताकि न केवल तर्क समझा जा सके बल्कि उसके समर्थन में दिये जाने वाले प्रमाणों का औचित्य भी स्पष्ट हो सके। उदाहरण के लिए उत्तर-औपनिवेशिक मुसलिम राजनीति की उनकी आलोचना केवल सेकुलरवाद के गुणगान पर नहीं टिकी हुई है; अपितु वे यह साबित करने की कोशिश करते हैं कि जिन आधारों पर मुसलमान अभिजन धर्म की राजनीति कर रहा है, वे इसलामसम्मत नहीं हैं।

यह तर्क-पद्धति दो तरह से सामने आती है। पहला, अपने तर्क को स्थापित करने के लिए तथ्यपरक प्रमाणों को प्रस्तुत करना; और दूसरे, एक ऐसा साफ़ रुख लेना जो राजनीतिक तौर पर कटिबद्ध तो हो पर उसे वक़्त और हालात के अनुरूप ढाला जा सके। दंगों पर इंजीनियर का लेखन उनकी तर्क-पद्धति की पहली ख़ासियत उजागर करता है। अन्य सेकुलर राजनीतिक पण्डितों की तरह इंजीनियर भी यह कहते हैं कि साम्प्रदायिक दंगों का कारण हिंदू-मुसलमान का धार्मिक होना नहीं है बल्कि वे स्थानीय मुद्दे और द्वंद्व हैं जो साम्प्रदायिक हिंसा का स्वरूप ले लेते हैं। लेकिन यह महज़ नैतिक दावेदारी नहीं थी। इंजीनियर ने अपने जीवन का एक बड़ा हिस्सा साम्प्रदायिक दंगों के स्थानीय कारणों को सूचीबद्ध करने में लगाया ताकि साबित किया जा सके कि जो तर्क वे दे रहे हैं, वह लफ़्फ़ाजी नहीं है। इंजीनियर की यही अनुभवपरकता हमें उनकी तर्क-पद्धति को दूसरी विशिष्टता की ओर ले जाती है। उन्होंने अपने लेखन में विचारधारा की पूजा करने के बजाय सामाजिक मुद्दों की जटिलता को केंद्र में रखा। बदलते सामाजिक विरोधाभासों के अध्ययन ने उन्हें एक स्पष्ट राजनीतिक पोजीशन दी, पर साथ ही उन्हें किसी भी विचारधारा का ग़ुलाम होने से भी बचाया। परिणामस्वरूप, इंजीनियर ऐसा मार्क्सवाद रच पाये जिसमें उनकी इसलामिक समझ के लिए जगह थी। वे मुसलमानों के लिए आरक्षण का ऐसा तर्क दे सके जिसके ज़रिये भूमण्डलीकरण की आलोचना सम्भव थी। साथ ही वे बिना यह कहे कि इसलाम में सब कुछ है, उसके दायरे में स्त्री-अधिकारों की मौजूदगी साबित कर सके।

संदर्भ

शरद पाटिल (1976), 'अ मार्क्सिस्ट एक्सपोज़ीशन ऑफ़ इसलाम', *सोशल साइंटिस्ट,* खण्ड 4, अंक 10.

असग़र अली इंजीनियर (1990), *इसलाम ऐंड लिबरेशन थियोलॅजी, स्टर्लिंग पब्लिशर्स,* नयी दिल्ली.

असग़र अली इंजीनियर (1975), *इसलाम, मुस्लिम्स, इण्डिया,* लोकवाङ्गमय गृह, मुम्बई.

असग़र अली इंजीनियर (2011), *अ लिविंग फ़ेथ : माई क्वेस्ट फ़ॉर पीस, हारमॅनी ऐंड सोशल चेंज,* ओरिएंट ब्लैक स्वान, नयी दिल्ली.